ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-19 जनवरी-I, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

मानवता के विधान के विधाता

भारत की भूमि देवदूतों से भरी पड़ी है। हम ये नहीं कहते कि रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद जी व महर्षि दयानंद सरस्वती या अन्यानेक आत्मायें महान नहीं थीं, महान थीं, लेकिन एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने अपनी सम्पूर्ण संतति, संतान व सम्पत्ति को एक सेकेण्ड में विश्व कल्याणार्थ समर्पित कर अपना नाम उन देवदूतों में लिखवाया जिनसे सृष्टि की शुरुआत होती है।

भारत की देवभूमि को हज़ारों ऋषियों की तपस्थली का भी नाम देते हैं। उसी तपस्थली में एक तपस्थली माउण्ट आबू राजस्थान है, जहां पर एक कालजयी व्यक्तित्व द्वारा विश्व नवनिर्माण का इतिहास परमात्मा ने रचा और उस व्यक्तित्व का नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। जैसे प्रत्येक धर्म में कोई न कोई धर्म का प्रथम पुरोधा अवश्य होता है, वैसे ही सम्पूर्ण विश्व और उससे जुड़ी मानवता के आध्यात्मिक उत्थान हेतु परमात्मा ने हम सबके बीच से ही एक श्रेष्ठ मानव का चयन किया जो शांति और सद्भाव को लेकर कार्य करता है। जब भी उसकी जीवनी लिखी जाती है तो उसके गुणों के बारे में जितना कुछ लोग कहते हैं उससे वह कहीं अधिक होता है। ऐसे ही मानव धर्म के मसीहा जिनका नाम चिरकाल तक अमर रहेगा, जिसके द्वारा सम्पूर्ण मानवता को आध्यात्मिक मूल्यों से सर्वश्रेष्ठ बनाने का एक वृहद कार्य परमात्मा ने किया, का नाम है दादा लेखराज।

कालचक्र बदला

प्रथम विश्व युद्ध के त्रास के पश्चात् अंग्रेज प्रशासन काल में जब भारत जकड़ा हुआ था उस समय चारो तरफ अकाल, भूखमरी व प्राकृतिक आपदाओं का माहौल था, ऐसे समय में एक परा शक्ति (परमात्मा) ने सिंध हैदराबाद, जो अब पाकिस्तान में है, के एक जौहरी को परख कर मानव कल्याणार्थ निमित्त बनाया। उस काल में धर्म पतन की अवस्था की ओर अग्रसर था। लोग अपना सबकुछ शांति और सद्भाव के लिए देने को आतुर थे। ऐसे समय में ही दादा लेखराज को उस परमशक्ति ने निमित्त बनाकर ब्रह्मा नाम दिया और कहा कि मैं तुम्हारे द्वारा सृष्टि परिवर्तन का काम करूंगा जिन्हें ग्रन्थों में आदि देव, कहीं आदम, ऐडम आदि नाम दिये गये हैं।

अद्वितीय छवि

निराकार, ज्ञान के सागर, सर्वशक्तिवान परमपिता ने जिस आदि देव को अपना रथ बनाया वह अद्भुत, अनुपम व अद्वितीय था। अगर उनकी महिमा की जाए तो उसके लिए शब्द भी कम पड़ जाएंगे। हम सभी प्यार से उन्हें ब्रह्मा बाबा भी कहते हैं। जिन्होंने अपनी सहज तपस्या और त्याग के बल से कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। उनकी प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि ब्रह्मा बाबा सदैव अपने आप में निश्चय रखते थे और साथ ही अपने सभी कार्यों को परमात्मा के निमित्त करते थे। किसी भी परिस्थिति में सदा समर्थ संकल्प में रहते थे, उनको हमेशा रहता कि हमारा पिता हमारा रक्षक है, इसलिए हमारा बाल भी बांका नहीं हो सकता। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी, अपना सम्पूर्ण जीवन देने के पश्चात् भी उन्हें इस बात का बिल्कुल अभिमान नहीं था कि मैंने कुछ त्याग किया। अपनी शक्तिशाली वृत्ति से उन्होंने वायुमण्डल को अति शक्तिशाली बना दिया जिसका आधार परस्पर एक दूसरे को आत्मा देखने के साथ जोड़ा। ब्रह्माबाबा ने मातृशक्ति को सबसे ऊपर रखा, अगर हम यूं कहें कि नारी सशक्तिकरण की शुरुआत उन्होंने की तो ये कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ब्रह्माबाबा किसी को उठाने के लिए सदा कहा करते कि आपके अंदर ये विशेषता है और ये भी विशेषता है, अगर एक विशेषता और जुड़ जाये तो कितना अच्छा होगा। ऐसे थे हमारे देवभूमि के प्रथम देवदूत।

मानवता के विधान को रचने वाले विश्व रचयिता भाग्य विधाता ने दादा लेखराज को कालचक्र में आने वाले परिवर्तन का वह भयावह परिदृश्य दिखाया जिसको देखकर दादा लेखराज के रोमांच खड़े हो गए। क्या इस दुनिया का इस तरह परिवर्तन होगा? जलजला, प्रकृति का प्रकोप इतना भयानक था कि उस दृश्य का वर्णन करना बहुत मुश्किल है। लेकिन उसके दूसरे ही सीन में परमात्मा ने इनको दिखाया कि ऊपर से आत्मायें उतरती हैं और नीचे आकर देवता बन जाती हैं। तो एक तरफ सृष्टि के महापरिवर्तन का सीन और दूसरी तरफ स्वर्ग का दृश्य। इस साक्षात्कार को कराकर परमात्मा ने यह सिद्ध किया कि पुरानी दुनिया का परिवर्तन और नई दुनिया की स्थापना अब होनी है आपके द्वारा।